NBT
नवभारत टाइम्स
Hindi

Ghaziabad Crime: चीन से ट्रेनिंग लेकर बनाने लगा कैंसर की नकली दवा, मास्टरमाइंड डॉक्टर समेत 4 जेल में

गाजियाबाद: लोनी के ट्रॉनिका सिटी (tronika city) में कैंसर की नकली दवा की फैक्ट्री (fake medicine factory busted) पकड़ी गई है। 14 दवाओं के सैंपल जांच के लिए भेजे थे, जिनमें से 2 दवाएं नकली मिली हैं। एक लाख रुपये से ज्यादा कीमत वाली दवा में सिर्फ खाने वाला पाउडर मिलाया गया था। 2 दवाइयों में जो फॉर्म्यूला था, उसकी मात्रा भी कम मिली है। मास्टरमाइंड एक डॉक्टर है। जांच टीम का दावा है कि उसने चीन में नकली दवा बनाने की ट्रेनिंग ली, फिर दिल्ली में फैक्ट्री खोल ली। ट्रॉनिका सिटी में इन दवाइयों की पैकेजिंग कर दिल्ली-एनसीआर और देश के बाकी हिस्सों में सप्लाई होती थी।

पिछले साल नवंबर में दिल्ली क्राइम ब्रांच की टीम के साथ यूपी ड्रग्स डिपार्टमेंट ने छापेमारी की थी। आरोपी डॉक्टर और इंजीनियर को तब गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। ड्रग इंस्पेक्टर आशुतोष मिश्रा ने बताया कि नकली दवाइयों को फैक्ट्री से जब्त किया गया था। 14 दवाइयों का सैंपल लखनऊ की लैब में जांच के लिए भेजा था।

दिल्ली से सटे ट्रॉनिका सिटी में पिछले साल 11 नवंबर को छापेमारी हुई थी। दिल्ली क्राइम ब्रांच की टीम ने यूपी ड्रग्स डिपार्टमेंट के अधिकारियों की शुरुआती जांच के बाद डॉक्टर, इंजीनियर समेत 4 लोगों को गिरफ्तार किया था। अभी चारों आरोपी जेल में हैं। दवा नकली थी, इसकी जानकारी ड्रग्स डिपार्टमेंट की टीम को उसी समय हो गया था।

इन दवाइयों में मिलाया क्या गया था, इसकी पुष्टि के लिए लैब में सैंपल भेजा गया था। सामान्यतौर

पर चारों दवाइयां विदेश से ही आती हैं। डॉ. पवित्र प्रधान को इसका मास्टरमाइंड बताया गया। उसने चीन से ट्रेनिंग लेने के बाद दिल्ली में दवा बनाने की फैक्ट्री खोल ली। वहां से दवा बनाने के बाद ट्रॉनिका सिटी की फैक्ट्री में पैकेजिंग के लिए भेजता था। उसके साथ इंजीनियर शुभम मुन्ना, पंकज सिंह और अंकित शर्मा डिस्ट्रिब्यूशन से लेकर दूसरे काम देखते थे। फैक्ट्री में छापेमारी के दौरान जो दस्तावेज मिले, उनसे पता चला कि दिल्ली एनसीआर के साथ ही देश के बाकी हिस्सों में भी सप्लाई कर रहे थे।

कैंसर की दवाइयां सामान्यतौर पर काफी महंगी होती हैं। यही कारण था कि आरोपी केवल इन्हीं दवाइयों को बनाते थे। जो दवाइयां इनकी फैक्ट्री से बरामद हुईं, उनमें से कुछ की कीमत प्रति टैबलेट 10 हजार रुपये के आसपास है। अब तक की जांच में इब्रुटीनिब कैप्सूल (इब्रूक्शन) और इब्रुटीनिब कैप्सूल (ल्युसीब्रू 140) नकली मिली हैं। ये दवाइयां 8 से 10 हजार रुपये में मार्केट में मिलती हैं। ब्लड कैंसर और दूसरी दिक्कतों में इन दवाओं का इस्तेमाल होता है। हालात ज्यादा खराब होने पर ही डॉक्टर इन्हें खाने की सलाह देते हैं। इसी तरह लेवेनटीलिब कैप्सूल (लेनवेनिक्स-4) और लेवेनटीलिब कैप्सूल (लेनवैनिक्स 10) सब-स्टैंडर्ड मिला है। मतलब इन दवाओं में जो साल्ट (फॉर्म्यूला) इस्तेमाल हुआ है, वह मानक के अनुरूप नहीं है। इन दवाइयों की कंपनियां बांग्लादेश और कोलंबो की हैं।

Source: https://navbharattimes.indiatimes.com/state/uttar-pradesh/ghaziabad/up-news-in-hindi-fake-medicine-factory-busted-in-ghaziabad-loni-tronika-city/articleshow/98129263.cms